हिन्दू चुनौतियों के घेरे में

• तभी और केवल तब ही, तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो; जब इस नाम को सुनते ही तुम्हारी रगों में शक्ति की विद्युत तरगें दौड़ जाऐं।

• तभी और केवल तब ही, तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो सकोगे, जब तुम उनके लिए सब कुछ सहने को तत्पर रहोगे। उस महान गुरु गोविन्द सिंह के समान जिन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपना रक्त बहाया, रण क्षेत्र में अपने लाड़ले बेटों का बलिदान होते देखा।

• यदि तुम अपने देश का कल्याण करना चाहते हो तो तुममें से प्रत्येक को गुरु गोविन्द सिंह बनना होगा।

—स्वामी विवेकानंद

डॉ. कृष्ण वल्लभ पालीवाल

राष्ट्र एवं धर्म रक्षा मंत्र

- धर्मो रक्षति रक्षित : (मनु 3 : 56) धर्म उसी की रक्षा करता है, जो स्वयं धर्म की रक्षा करता है।
- कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (9 : 6 : 3 : 5)
  विश्व के लोगों को आर्य बनाओ।
- **अग्रतः चतुरो वेदाः प्रष्टतः सशरोधनुः।**
  इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शास्त्रादि शस्त्रादि।। (महाभारत)

चारों वेदों की प्रामाणिकता और शस्त्र बल से धार्मिक आस्था को पुष्ट करो। एक तरफ शास्त्रादि के ब्राह्म बल से और दूसरी तरफ शस्त्रादि के क्षात्र बल से धर्म की रक्षा करो।

- धर्म पालन ही जीवन और धर्मान्तरण ही मृत्यु है।
- धर्म रक्षा ही ईश्वर पूजा है।
- धर्म रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है।
- धर्मार्थ बलिदान सर्वोत्तम बलिदान है। (गीता 3 : 35)
- धर्मार्थ दान सर्वोत्तम दान है।
- हिन्दू की रक्षा देश की रक्षा है।
- अध्यात्म की आराधना स्वराज्य में ही संभव है।
- हिन्दू की रक्षा मानवता की रक्षा है।
- भारतीय सैक्यूलरवाद हिन्दुओं के लिए अभिशाप है।
- संगठन ही जीवन व विघटन ही मृत्यु है।
- परिवार नियोजन हिन्दुओं के लिए आत्मघाती है।
- जात-पांत, छुआछूत व ऊँच-नीच हिन्दू धर्म के अंग नहीं।
- हिन्दू धर्म में दलित व वंचित कोई नहीं। सब बराबर के भाई हैं। सबको गले लगाओ।
- हिन्दुओं का सैनिकीकरण और राजनीतिक का हिन्दूकरण करो।
- हिन्दू वोट बैंक तैयार करो।
- हिन्दुओं के धर्मान्तरण का विरोध करो।

हिन्दू चुनौतियों के घेरे में

डॉ. के.वी. पालीवाल

चुनौतियों के घेरे में

आज भारत, और विशेषकर हिन्दू समाज, अपनी अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक समस्याओं के कारण भीतरी और बाहरी संकटों से जूझ रहा है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वितीय सर संघ चालक श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर उर्फ 'गुरु जी' ने अपनी पुस्तक '*बंच ऑफ थॉट्स*' (पृष्ठ 117-196) में देश की आन्तरिक सुरक्षा के लिए जिन तीन खतरों को मुख्य करके बतलाया वे हैं : कट्टरपंथी इस्लाम, साम्राज्यवादी ईसाईयत और साम्यवाद। यदि इनमें सत्ता के लिए 'मुस्लिम वोट बैंक' और 'जातिगत राजनीति' को और जोड़ दें तो ये पाँच तत्व धर्म निरपेक्षता (सैक्यूलरिज़्म), प्रजातंत्र और देश की अखंडता के लिए खुली चुनौतियाँ हैं।

हिन्दुस्थान पर लगातार हमलों की एक संक्षिप्त झांकी

हिन्दू धर्म और हिन्दुस्थान की अखंडता पर ढाई हजार वर्षों से लगातार हमले होते आ रहे हैं। सबसे पहला धार्मिक हमला अनीश्वर वादी बौद्धों ने किया जिसका आदि शंकराचार्य ने 'शास्त्र बल' और 'शस्त्रबल' से निराकरण किया। इसे 'शंकर दिग्विजय' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने हिन्दुओं को भविष्य में भी, धार्मिक व राजनैतिक संकटों से बचाने के लिए देश के चारों कोनों पर चार 'शंकर मठ' स्थापित किए ताकि वहाँ से धर्माचार्य, प्राचीन काल के गुरुकुलों की तरह, शास्त्र और शस्त्र विद्याओं में प्रशिक्षित होकर हिन्दू धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा करने योग्य हो सकें। परन्तु खेद है कि बाद में ये मठ भी '*ब्रह्म सत्यं जगन्नमिथ्या*' यानी 'ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है, बाकी सांसारिक समस्याऐं मिथ्या हैं' के थोथे नारे में फँस गए, और धर्म रक्षा की मूल आत्मा 'राजधर्म' और 'शस्त्र बल' के महत्त्व को त्यागकर केवल अध्यात्मवाद तक में सीमित हो गए। वही निष्प्राण धर्म शिक्षा व्यवस्था, और भी विकृत होकर, आज तक चली आ रही है। रामायण और महाभारत साक्षी हैं कि शंकराचार्य से पहले भी हिन्दुओं के गुरुकुलों में आध्यात्मिक शिक्षा के साथ शस्त्र

शिक्षा और राजधर्म की अनविार्य शिक्षा की परम्परा थी, क्योंकि जहाँ आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के बिना व्यक्ति एवं राष्ट्र अंधा है, उसी प्रकार शस्त्र और राजधर्म की शिक्षा के बिना धर्म व राष्ट्र अपंगु हैं। अतः आज हिन्दू समाज में अध्यात्म, प्राचीन इतिहास एवं राजधर्म आदि की शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है

विदेशियों के हमले

इतिहास साक्षी है कि हिन्दुओं ने किसी बाहरी देश पर कभी कोई हमला नहीं किया। फिर भी विदेशियों ने हिन्दुस्थान पर अकारण लगातार अनेकों हमले किए। सबसे पहले शक और हूणों के हमलों को हिन्दू शूरवीरों ने असफल कर दिया और अन्त में वे हिन्दू समाज में घुल मिल कर विलीन हो गए।

ईसाईयों ने भी पहली सदी से ही भारत पर हमले प्रारंभ कर दिए एवं छल, कपट, लोभ, लालच व झूठ द्वारा हिन्दुओं का धर्मान्तरणा किया जोकि आज तक और भी तेजी से चला आ रहा है। फ्रांसीसी व पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने यहाँ अपनी-अपनी कॉलोनियाँ भी बना लीं थीं जिन्हें अब भारत में मिला लिया गया है।

मुसलमानों ने भी 636 एडी. से ही हिन्दू धर्म को समाप्त करने एवं भारत को इस्लामी राज्य बनाने के लिए लगातार अनेकों हमले किए : उन्हें कुरान का आदेश है :

1. *"उनसे युद्ध करो जहाँ तक फितना शेष न रहे और 'दीन' अल्लाह का हो जाए"*। (2 : 193)

2. "वही है जिसने अपने 'रसूल' को मार्ग दर्शन और सच्चे 'दीन' (सत्य धर्म इस्लाम) के साथ भेजा ताकि उसे समस्त 'दीनों' पर प्रभुत्व प्रदान करे। चाहे, मुशरिकों (मूर्ति पूजकों) को नापसंद क्यां न हो।" (9 : 33)

परन्तु हिन्दू योद्धाओं ने, 710 एडी तक के सभी दसों मुस्लिम हमलों को विफल कर दिया। (*राम गोपाल मिश्रा, हिन्दू रेजिस्टेंस टू अर्ली इनवेजन्स, पृष्ठ 18*)

परन्तु 712 में मुहम्मद बिन कासिम का हमला ब्राह्मणों के अंधविश्वास तथा बौद्धों एवं राजा दाहिर के मंत्री सिस्कार के विश्वासघात के कारण, सफल हो गया। लेकिन राजा दाहिर की दोनों पुत्रियों की सूझ बूझ के कारण खलीफा ने कासिम की हत्या करवादी। परिणामस्वरूप अधिकांश बलात् धर्मान्तरित हिन्दू फिर से स्वधर्म में वापिस आ गए।

पश्चिमोत्तर भारत के काबुल व जाबुल के हिन्दू राजाओं ने 650 से 860 तक मुसलमानों को कड़ी टक्कर दी। परन्तु 870 में अरबों ने शान्ति संधि प्रस्ताव के बहाने अकेले बुलाकर निहत्थे हिन्दू राजा की हत्या कर दी (*मिश्रा, वही पृष्ठ 38*)। काबुल के हिन्दू शाह वंश ने सुबुक्तगीन (977-997) और महमूद गज़नवी से अनेक युद्ध किए। राजा जयपाल ने तो 987 में गज़नी पर हमला किया। परन्तु एक रात को भयंकर बर्फीली आँधी से उसकी सेना को महान क्षति पहुँची और उसे विवश होकर संधि करनी पड़ी (*मजूमदार, आदि एन एडवान्स्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ. 183*)

महमूद गजनवी (998-1030) ने अपने राज्यकाल के तीस वर्षों में भारत पर ग्यारह हमले (1001, 1006, 1008, 1010, 1014, 1015, 1018, 1022, 1023, 1025 और 1026 एडी) किए। परन्तु वह हर बार लूटपाट, कत्लेआम एवं मंदिर विनाश करके वापिस चला गया। राजा भीम पाल ने तो उसे 1015 में हराया भी था। इस प्रकार पश्चिमोत्तर भारत के हिन्दू राजाओं के सशक्त विरोध के कारण मुसलमान 636 से 1175 तक भारत में कहीं भी अपना राज्य स्थापित न कर सके। हालांकि पृथ्वीराज चौहान (1166-1192) ने शहाबुद्दीनगौरी (1173-1206) को सत्रह बार हराया था। मगर मुस्लिम मानसिकता से अनभिज्ञ पराक्रमी चौहान ने हरबार उसे छोड़ दिया। इसके विपरीत, 1192 में गौरी ने धोखे से पृथ्वीराज की हत्या करवा दी। इसी तरह राजा जयचन्द की 1193 में हत्या कर दी गई।

अनेक संघर्षों के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210) भारत का पहला मुस्लिम शासक हुआ। परन्तु मुस्लिम शासकों पर भी मुसलमानों ने हमले किए। मंगोल का चंगेज खां, 1221 एडी में मुस्लिम शासकों पर हमला करके वापिस चला गया। इसी प्रकार 1398 में, तैमूर लिंग ने हमला कर भयानक कत्ले आम, लूटपाट एवं हिन्दुओं का धर्मान्तरण एवं मंदिरों का विनाश किया। इसके बाद 1526 में बाबर ने और अफ़गानिस्तान के सुलतान अहमदशाह अब्दाली ने 1748 से 1767 तक आठ हमले (1748, 1750, 1751, 1756, 1759, 1761, 1764, 1767 एडी) किए तथा 1206 से 1846 तक भारत के विभिन्न माँगों पर इस्लामी राज्य रहा। **परन्तु समस्त भारत पर मुस्लिम राज्य कभी भी स्थापित न हो सका।** भारत पर अपना राज्य स्थापित करने के लिए, एक मुस्लिम वंश ने दूसरे मुस्लिम वंश से युद्ध किया सुन्नियों ने दक्षिण में शियाओं से युद्ध किया।

भारत में मुस्लिम राज्य स्थापित हो जाने के बाद भी अनेक हिन्दू योद्धाओं जैसे महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप

(1540-1597), क्षत्रपति शिवाजी (1630-1680), वाजीराव पेशवा (1698-1740), गुरुगोविन्द सिंह (1660-1708), वीरबन्दा बहादुर (1670-1710), हरिसिंह नलवा (1791-1836) एवं अनेक मराठे, जाट, गूजर, सिख व राजपूत राजाओं आदि ने मुसलमानों से जबरदस्त टक्कर ली। विजयानगरम् के राजाओं ने तो 1350 से 1565 तक राज्य किया परन्तु 1565 में राजा के दो मुस्लिम सेनापति अपनी-अपनी 70000-80000 की सेना सहित मुस्लिम आक्रमणकारी आदिलशह की सेना में मिलने के विश्वासघात के कारण राजा हार गया।

इतिहास बताता है कि हिन्दू-मुस्लिम युद्धों में हिन्दू, वीरता की कमी के कारण नहीं, बल्कि मुस्लिम आक्रान्ताओं की छल-कपट और विश्वासघात की नीतियों को न जानने के कारण हारे। फिर भी हिन्दुओं ने, 1206 से 1846 तक, मुसलमानों को सारे भारत पर इस्लामी राज्य स्थापित नहीं होने दिया। खेद है कि अनेक हिन्दू योद्धा, पैसे या विवशता के कारण मुसलमानों की सेना की ओर से हिन्दुओं से लड़े।

काश! पृथ्वीराज व दूसरे हिन्दू राजा मुसलमानों की छल, कपट व विश्वासघात की नीतियों से भरे इतिहास से परिचित होते, और तदनुसार उनसे निबटा होता तो आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता। आज के हिन्दू नेता भी मुस्लिम राजनीति व उनके उद्देश्यों से अनजान जैसे हैं।

व्यापारी बनकर आए ब्रिटिशों ने, सैनिक शक्ति व कूटनीति से मुसलमानों से भारत का राज्य छीन लिया जो 1846 से 1947 तक चला। इस काल खंड में मराठों, जाटों, सिखों व अन्यों ने ब्रिटिशों से लोहा लिया। सिख राजा रणजीत सिंह (1780-1839) का तो पंजाब से पेशावर तक राज्य रहा।

स्वतंत्रता आन्दोलन

ब्रिटिश काल खंड में, महर्षि दयानन्द सरस्वती (1825-1882), स्वामी विवेकानन्द, (1863-1902) विनायक दामोदर सावरकर (1883-1966) आदि ने राष्ट्रभक्ति की ज्योति जगाई तथा अनेक क्रान्तिकारियों जैसे सुभाष चन्द्र बोस, मदनलाल ढींगरा आदि ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन को आगे बढाया। आर्य समाज एवं हिन्दू महासभा ने भी इसमें सहयोग दिया। वास्तव में, यह हिन्दू आन्दोलन था। परन्तु देश के दुर्भाग्य से इस आन्दोलन की बागडोर कांग्रेस के हाथ में आ गई जो कि कभी राष्ट्रीय पार्टी रही ही नहीं। 1885 में ए.ओ ह्यूम नामक

ब्रिटिश अधिकारी द्वारा स्थापित कांग्रेस अगले तीस वर्षों तक वास्तव में ह्यूम के ही नियंत्रण में रही। 1915 में बाल गंगाधर तिलक के कांग्रेस में सक्रिय हो जाने के बाद से इसमें राष्ट्रभक्ति जागी। परन्तु दुर्भाग्य से एक अगस्त 1920 को तिलक जी के निधन के बाद, कांग्रेस पर गाँधी का प्रभुत्व हो गया। गाँधी ने अपना खिलाफत आन्दोलन शुरू किया जो कि एक मुस्लिम आन्दोलन था। 1920 से ही गाँधी का कांग्रेस पर वर्चस्व हो जाने के कारण, वह विशुद्ध राष्ट्रवाद से हटकर मुस्लिम परस्त हो गई।

कांग्रेस का हिन्दुओं के साथ विश्वासघात

पिछले 1300 वर्षों के इतिहास में, हिन्दू भारत पर सबसे घातक हमला गाँधी-नेहरू-कांग्रेस ने किया। मार्च 1940 में मुस्लिम लीग ने 'द्विराष्ट्र सिद्धान्त' यानी 'हिन्दू-मुस्लिम' अलग-अलग कौमे हैं', के आधार पर भारत का विभाजन माँगा जिसे कांग्रेस ने 1947 में दिया। भारतवर्ष का ऐसा विभाजन पहले भी हुआ था, जब विशाल भारत वर्ष में से 1876 में अफ़गानिस्तान, 1904 में नेपाल, 1906 में भूटान, 1914 में तिब्बत,1937 में ब्रह्मदेश (मयामार) और 1947 में पाकिस्तान और बंगलादेश, अलग हुए थे। आज भारत सहित इन देशों के लगभग साठ करोड़ मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू ही थे।

हिन्दुओ! मत भूलो! भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, बल्कि भारत का धर्म के आधार पर विभाजन हुआ, जिसमें एक भाग काट कर इस्लामी राज्य पाकिस्तान के नाम से मुसलमानों को दे दिया गया और शेष भारत की सत्ता अंग्रेजों से लेकर हिन्दू विरोधी, छद्म् सैक्यूलरवादी, मुस्लिम परस्त कांग्रेस को दे दी गई। इससे हिन्दुओं के साथ अनेक अन्याय हुए—पहला जिन आर्य समाज व हिन्दू महासभा आदि हिन्दू संगठनों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में महान बालिदान किए, उन्हें सत्ता के बाहर कर दिया गया और सम्पूर्ण सत्ता गाँधी-नेहरू कांग्रेस तक सीमित हो गई जो स्वयं हिन्दुओं की प्रतिनिधि बन गई। दूसरा जब देश का विभाजन ही धर्म के आधार पर हुआ था, तो भारत के सभी मुसलमानों को विभाजन से पहले पाकिस्तान में और वहाँ के हिन्दुओं को भारत में बसा देना चाहिए था। भारत के नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर और डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने हिन्दू मुस्लिम आबादी की अदला-बदली को हिन्दू-मुस्लिम समस्या का एक मात्र, स्थायी और आवश्यक हल बतलाया था। यहाँ तक कि पाकिस्तान के मुस्लिम नेताओं जैसे सर फिरोज खां ने अप्रैल

1946 में, तथा खान इफ्तिहार खां, पीर इलाही बक्स और राजा गजनफर अली आदि ने दिसम्बर 1946 में नेहरू को अलग-अलग पत्र लिखकर हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली को अत्यन्त व्यावहारिक माना और बलपूर्वक इनकी माँग की। (*प्रफुल्ल गोराडिया, अनफिनिश्ड एजेंडा*)।

परन्तु जिद्दी, स्वार्थी और हिन्दू व राष्ट्र विरोधी नेहरू ने इन सुझावों को नहीं माना जिसके विरोध में डॉ. श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने नेहरू मंत्रि मंडल से त्यागपत्र दे दिया। परन्तु खेद है कि किसी भी हिन्दू संगठन जैसे आर.एस.एस, महासभा, आर्य समाज आदि ने नेहरू की इस विनाशकारी नीति का डटकर विरोध करने का साहस नहीं किया। इतना ही नहीं, नेहरू ने, न केवल भारतीय मुसलमानों को भारत में ही बसे रहने का आग्रह किया बल्कि जो मुसलमान पाकिस्तान चले भी गए थे, उन्हें सभी प्रकार की सुविधाऐं देने के आश्वासन देकर, वापिस भारत लाने का अथक प्रयास भी किया।

नेहरू की इस नीति में नेहरू परिवार और मुसलमानों दोनों का ही स्वार्थ निहित था। हिन्दू विरोधी नेहरू भली-भाँति जानता था कि विभाजित हिन्दू बहुल भारत में वे केवल हिन्दू वोटों के सहारे लम्बे समय तक राज नहीं कर सकेंगे। अतः उन्होंने ने न केवल मुसलमानों को यहाँ बसाए रखा बल्कि उन्हें संतुष्ट करने के लिए भारत को हिन्दू राज्य न बनाकर, हिन्दू विरोधी छद्म सेक्यूलर राज्य घोषित कर दिया तथा अनेक सुविधाऐं दीं। यहाँ तक कि संविधान के अनुच्छेद 25-30 के अन्तरगत मुसलमानों को भाषा और आबादी के आधार पर अल्पसंख्यक मानकर अनेक विशेषाधिकार दिए जो कि बहु संख्यक हिन्दुओं को भी नहीं हैं, जबकि मुसलमान, उपरोक्त दोनों मापदण्डों में से, किसी के भी अनुसार समस्त भारत में अल्पसंख्यक नहीं हैं, और न सरकार ने आज तक अल्पसंख्यक होने के कोई सुस्पष्ट मापदण्ड स्थापित किए हैं।

नेहरू ने, भारत पर मुस्लिम वोटों के सहारे लम्बे समय तक राज करने की जो नीति बनाई थी, वह व्यवहार में सच निकली। पिछले 66 वर्षों (1947-2013) में से 56 वर्षों तक नेहरू एवं उसके परिवार का ही राज रहा। पहले वह स्वयं, फिर उसकी बेटी इंदिरा गाँधी एवं नाती राजीव गाँधी प्रधानमंत्री रहे और अब (रोबर्ट) राजीव गाँधी की विदेशी मूल की पत्नी सोनिया मानिया गाँधी पिछले पन्द्रह वर्षों से कांग्रेस अध्यक्ष के नाते सरकार की सर्वे सर्वा है तथा आज भी राजीव गाँधी के बेटे राहुल गाँधी

को भावी प्रधानमंत्री प्रस्तुत किया जा रहा है। नेहरू के मुसलमानों को भारत में रोकने के निर्णय में मुसलमानों का भी स्वार्थ था। वे भारत में रहकर व तेजी से अपनी जनसंख्या बढ़ाकर और वोट बैंक की राजनीति करके सरकार से विशेषाधिकार लेते रहेगें तथा आगे चलकर बहुसंख्यक होने पर शेष भारत पर भी धीरे-धीरे अपना राज्य स्थापित कर सकेंगे। यदि आवश्यकता हुई तो पाकिस्तान के क्षेत्र से आक्रमण करके इस कथन को सचकर सकेंगें :

''हँस के लिया है पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान''

तत्कालीन मुसलमानों का भी यही विचार था। (1) एफ.ए. दुर्रानी ने कहा–*''पाकिस्तान का निर्माण इसलिए महत्त्वपूर्ण था कि उसको पड़ाव (शिविर) बनाकर शेष भारत का इस्लामीकरण किया जाए।''* ''भारत, सम्पूर्ण भारत हमारी पैत्रिक सम्पत्ति है और उसका फिर से इस्लाम के लिए विजय करना नितान्त आवश्यक है।'' (पुरुषोत्तम, मुस्लिम राजनीतिक चिन्तन और आकांक्षाऐं पृष्ठ 51-53)

(2) मौलाना अबुल कलाम आजाद (पूर्व शिक्षा मंत्री भारत सरकार) ने कहा–*'' भारत जैसे देश को जो एक बार मुसलमानों के शासन में रह चुका है, कभी भी त्यागा नहीं जा सकता, और प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है कि उस पर खोई हुई मुस्लिम सत्ता को फिर से प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करे।''* ()

यहाँ प्रश्न यह है कि जब मुसलमानों को उनकी सम्पूर्ण आबादी के अनुपात में भारत में से काटकर भूमि पाकिस्तान को दे दी गई तो फिर उनको भारत में बसाए रखने का क्या औचित्य रह जाता है? यदि उन्हें बसाना ही था तो उनकी आबादी के अनुपात की जमीन पाकिस्तान को नहीं दी जानी चाहिए थी। यह तो हिन्दुओं के देश-शेष भारत पर मुसलमानों का अनधिकार कब्जा है तथा द्वि राष्ट्र सिद्धान्त एवं बंटवारे की शर्तों का खुला उल्लंघन है।

इसी प्रकार किसी अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था की गारंटी के वगैर हिन्दुओं को पाकिस्तान की दया पर वहाँ छोड़ देना तो हिन्दुओं के साथ अन्याय हुआ। परन्तु नेहरू कांग्रेस एवं भारत की सरकारों ने पाकिस्तानी हिन्दुओं की सुरक्षा के लिए कोई आवाज़ नहीं उठाई। पाकिस्तान ने तो हिन्दुओं के साथ वही व्यवहार किया जो कि कुरान के अनुसार, किसी इस्लामी देश में काफिरों के लिए निर्धारित है।

भारत में 1947 में बसे 3.5 करोड़ मुसलमान तो आज बढ़कर लगभग 12-13 करोड़ हो गए हैं जबकि पाकिस्तान व बंगलादेश में बसे हिन्दू क्रमशः 11 और 34 प्रतिशत से घटकर आज 1.4 और 5 प्रतिशत रह गए हैं। नेहरू कांग्रेस की नीतियों के कारण पाकिस्तान और बंगला देश के हिन्दू वहाँ के इस्लामी राज के कारण, और भारत के हिन्दू छद्म सैक्यूलर बाद के कारण, अत्याचार व उपेक्षा के शिकार हुए। पाकिस्तान के हिन्दुओं पर अत्याचार, नरसंहार, उपेक्षा और अधिकार हनन के लिए सिर्फ नेहरू कांग्रेस और तत्कालीन (1947) के दब्बू हिन्दू नेता उत्तरदायी हैं। भारतीय मुसलमानों के साथ तो वैसा व्यवहार होना चाहिए जो कि उनकी सरकारें पाकिस्तान व बंगलादेश में रह रहे हिन्दुओं के साथ कर रही हैं।

यदि नेहरू ने, 1947 में हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली कर दी होती तो लाखों हिन्दुओं का अकारण नरसंहार न होता। उनका बलात् धर्मान्तरण न होता, भारत में आए दिन साम्प्रदायिक दंगे न होते। पाकिस्तान व बंगलादेश में बसे रहे असहाय व असुरक्षित हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार न होते। 1971 में बंगलादेश में लाखों हिन्दुओं का संहार और हजारों हिन्दू महिलाओं पर बलात्कार न होता।

वास्तव में ***हिन्दू-मुस्लिम आबादी की अदला-बदली न करने के दुष्परिणाम भारत विभाजन से भी अधिक विनाशकारी और भयानक सिद्ध हुए हैं।*** आज 2013 में, वही 1945-46 की सी, स्थिति पैदा होती जा रही है जो कि शेषभारत के भी इस्लामी करण की ओर बढ़ रही है। *इस विकट व संकटग्रस्त स्थिति के लिए कांग्रेस की मुस्लिम वोट बैंक और मुस्लिमतुष्टीकारण की नीति पूरी तरह से उत्तरदायी है।* अब अपनी रक्षा के लिए हिन्दुओं के सामने, कांग्रेस को उखाड़ फेंकने के अलावा अन्य कोई विकल्प नहीं है। यदि इसी प्रकार हिन्दू आबादी घटती रही और मुस्लिम आबादी बढ़ती रही, तो यदि अगले बीस-तीस वर्षों में भारत में इस्लामी राज्य हो जाता है, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

मुस्लिम तुष्टीकरण और हिन्दुओं की उपेक्षा

गाँधी नेहरू कांग्रेस ने सत्ता में बने रहने के लिए सैक्यूलर राज्य होते हुए की मुसलमानों के वोटों के लिए उन्हें अनेकों धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक विशेष अधिकार दिए जो कि बहुसंख्यकों को भी नहीं दिए एवं हिन्दुओं की उपेक्षा की जैसे–

1. संविधान में धारा 370 के अन्तरगत, काशमीर में अनेक विशेषाधिकार दिए जिसके कारण वहाँ अलगाववाद चरम सीमा में है।

2. काशमीर से धीरे-धीरे मुसलमानों ने लाखों हिन्दुओं को निकाल दिया, परन्तु कांग्रेस सरकार चुप रही। हिन्दू अपने ही देश में शरणार्थी बने हुए हैं।

3. कांग्रेस ने प्रारम्भ से ही बंगलादेशी मुस्लिम घुसपैठियों को यहाँ बसाना शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप विशेषकर आसाम, बंगाल और बिहार के अनेक जिलों में मुस्लिम बहुसंख्यक हो गए हैं जो वहाँ की राजनीति को प्रभावित कर रहे हैं।

4. इंदिरा गाँधी के 15 सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत मुसलमानों को सस्ती ब्याज दर पर कर्ज, शिक्षा, रोजगार व आर्थिक सहायता की व्यवस्था आदि की।

5. आतंकवाद में फंसे मुसलमानों को बचाने के लिए पोटा निरस्त कर दिया गया जिसके अभाव में आतंकवाद पर काबू पाना मुश्किल हो रहा है।

6. पिछली (1998-2002) सरकार के आयकर दाताओं एवं बार-बार हज करने वालों को मिलने वाली सब्सिडी पर लगे प्रतिबंध को निरस्त कर दिया।

7. पाठ्य-पुस्तकों में से पिछली सरकार द्वारा निकाले गए हिन्दू-विरोधी और मुस्लिम उन्मुख अंशों को दुबारा पुस्तकों में डाल दिया गया।

8. आतंकवाद को प्रोत्साहित करने वाली मदरसा व्यवस्था को न केवल दोष मुक्त बताया बल्कि उन्हें भारी आर्थिक सहायता दी।

9. ओबासी विद्यार्थियों को केन्द्र सरकार से समर्थित उच्च शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण देते समय 'अल्प संख्यकों के संस्थानों' को इस आरक्षण से मुक्त रखा गया।

10. धार्मिक कट्टरतावादी मदरसा शिक्षा व्यवस्था को बढ़ावा दिया।

11. मुस्लिम पर्सनल कानून और शरिया कोर्टों का समर्थन किया।

12. इलाहाबाद हाई कोर्ट के विरोध के बावजूद, अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय को सरकारी खर्चे पर अल्पसंख्यक स्वरूप बनाए रखने पर बल दिया।

13. अल्पसंख्यकों के नाम पर मुसलमानों के लिए केन्द्रीय सरकार में एक अलग मंत्रालय बनाया।

14. उनके लिए मुस्लिम आर्थिक कार्पोरेशन का गठन किया।

15. मुसलमानों के कल्याण के लिए बजट में 15 प्रतिशत राशि निर्धारित की।

16. सरकार का इस्लामी आतंकवाद रोकने में कोई रूचि दिखाई नहीं देती है।

17. मुसलमानों के कल्याण के लिए गठित सच्चर कमेटी की अनेक शिफारिशों को स्वीकार किया गया।

18. सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को आरक्षण देने के प्रयास जारी है।

19. कुछ मुस्लिम जातियों को ओबीसी कोटे में से आरक्षण दिया भी गया है।

20. दैनिक जागरण (3 जून 2013) के अनुसार भारत के 26 राज्यों के 196 जिलों के 710 अल्पसंख्यक ब्लाकों को विकास के लिए चुना गया है जहाँ की मुस्लिम आबादी 15 प्रतिशत या उससे अधिक है।

इसी प्रकार (जागरण 12 जून 2013) मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में 44 पौली टेक्नीकल और 113 आई टी आई स्कूल खोले जाऐंगे।

प्रश्न यह है कि क्या बहुसंख्यक पिछड़े नहीं हैं ? इन्हें विकास की आवश्कता नहीं है ? क्या सरकार का उद्देश्य समस्त राष्ट्र का विकास करना नहीं है ? अन्त में सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह कि देश के प्रधानमंत्री ने 17 दिसम्बर (2006) को नेशनल डवलपमेंट काउंसिल की मीटिंग में यहाँ तक कह दिया है कि **"भारतीय संसाधनों पर मुसलमानों का अधिकार पहला है।"** कांग्रेस की उपरोक्त गतिविधियों से अनुमान लगता है वह जल्दी ही भारत को इस्लामी राज्य बना देना चाहती है। यह स्थिति तो तब है जबकि मुसलमान सरकार नीतियों जैसे परिवार नियोजन को नहीं अपनाते है। वे सैक्यूलरिज्म में विश्वास नहीं करते। बल्कि वे चाहते हैं कि **भारत तो सैक्यूलर राज्य रहे, हिन्दू राज्य न हो जावे,** ताकि वे अपने को वोट बैंक के बल पर अधिकतम उचित-अनुचित लाभ उठाते रहें।

मुस्लिम लीग व मुस्लिम वोटों की बैसाखियों पर टिकी वर्तमान यूपीए सरकार, सत्ता में बने रहने के लालच में इनकी राष्ट्र विरोधी एवं इस्लामी आतंकवादी गतिविधियों के विरुद्ध कोई ठोस कदम उठाना नहीं चाहती है, भले ही भारत का फिर से विभाजन क्यों न हो जाए?

इनके लिए मुसलमानों का वोट राष्ट्रीय अखंडता और भारत की सुरक्षा से भी अधिक कीमती हो गया है, जबकि मुस्लिम राजनैतिक संगठनों का अन्तिम उद्देश्य शेष भारत में भी इस्लामी राज्य स्थापित करना है जो कि उचित अवसर की तलाश में है।

अब विदेशी मुस्लिम ताकतें भी खुले युद्ध के बजाय, भारत को अन्दर से ही तोड़ना चाहती हैं तथा कांग्रेस, सपा, राजद, सी.पी. एम आदि दल उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की उपेक्षा कर रहे हैं। साथ ही उनकी उचित-अनुचित सभी राजनैतिक व आर्थिक माँगों का समर्थन कर रहे हैं।

विडम्बना तो यह है कि इन सब पार्टियों के अधिकांश नेता हिन्दू ही हैं, और यह उस देश के हिन्दू नेताओं की मानसिकता है जिनके पूर्वजों, विशेषकर हिन्दू राजाओं, राजपूतों, मराठों, जाटों एवं सिख गुरुओं ने स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए सदियों (636-1947 एडी) विदेशी आक्रामकों, मुस्लिम सुलतानों व ब्रिटिशों से लोहा लिया, संघर्ष किया और प्रशंसनीय बलिदान किए। इनका शौर्यपूर्ण इतिहास इसका साक्षी है।

फिर क्या करें ?

1. स्वधर्म रक्षा के प्राचीन गुरुमंत्र अपनायें—हमारे धर्म शास्त्रों ने स्वदेश, स्वधर्म एवं स्व संस्कृति की रक्षा के लिए देशवासियों में संकल्प शक्ति एवं राष्ट्र भक्ति जगाने की विधियों के साथ-साथ सशस्त्र धर्मयुद्ध करने का भी आदेश दिया है। इनका मूलमंत्र है—**'ब्राह्मबल'** और **'क्षात्रबल'** का समुचित समन्वयन करना। यजुर्वेद (20 : 25) का संदेश है—**'यत्र ब्रह्मं च क्षत्रं सम्यंचौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा सहाग्निना'** यानी "जिस देश में" 'ब्राह्म बल' (ज्ञान-विज्ञान की शक्ति) और 'क्षत्रिय बल' (सैनिक शक्ति, राष्ट्र भक्ति व सामुदिक बल) मिलकर कार्य करते हैं, वह देश कल्याणकारी, सुरक्षित और सब प्रकार से उन्नत होता है।"

यही बात महाभारत में बार-बार कही गई है जैसे—

"अग्रतः चतुरो वेदाः प्रष्टतः सशरोधनु"।
इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शस्त्रदपि शास्त्रदपि।।

"चारों वेदों की प्रामाणिकता और शस्त्र बल से धर्म की पुष्टी करो। एक तरफ शास्त्रादि के **'ब्राह्मबल'** और दूसरी तरफ शस्त्रादि के **'क्षात्र बल'**

से स्वधर्म एवं स्वदेश की रक्षा करो।'' इसका यही अर्थ हुआ कि देश का प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म शास्त्र को जाने जिससे राष्ट्र भक्ति जागृत हो, स्वधर्म पालन की प्रेरणा मिले तथा स्वदेश रक्षा के लिए यदि आवश्यक हो तो शस्त्रादि से शत्रु से संघर्ष करे। इसीलिए हिन्दू धर्म शास्त्रों में '*क्षात्र या क्षत्रिय धर्म*' सबसे पहले स्थापित किया गया है और स्वधर्म, स्वसंस्कृति एवं स्वदेश की रक्षा करने लिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए क्षत्रिय धर्म को अपनाना सर्वोपरि माना गया है। इस विषय में महाभारत कहता है–

असैनिका धर्मपराश्च धर्म परांगतिं न नयन्ते हृक्तम्।
क्षात्रो धर्मों हादि देवात् प्रवृतः पश्चादन्ये शेष भूताश्चधर्मों।।

(शां. प. 64 : 21)

''आदि देव भगवान् से सबसे पहले क्षात्र या क्षत्रिय धर्म ही प्रवृत्त हुआ है। अन्य धर्म उसी के अंग हैं जो बाद में प्रगट हुए हैं। जो राजा (नेता) सैनिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं हैं; धर्म परायण होते हुए भी, वे प्रजा की अनायास ही धर्म विषयक परम गति की प्राप्ति नहीं करा सकते हैं।''

शेषाः स्पष्ट हानन्ता सप्रस्थानाः क्षात्र धर्म विशिष्टा।
आस्मिन् धर्मे सर्वधर्माः प्रविष्टास्तस्माद् धंर्म श्रेष्ठमिम् वदन्ति।।

''क्षत्रिय धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। शेष धर्म असंख्य हैं और इनके फल भी विनाशशील हैं। इस क्षत्रिय धर्म में सभी धर्मों का समावेश हो जाता है। इसलिए इस धर्म को श्रेष्ठ धर्म कहते हैं।''

सर्वधर्मपरं क्षात्रं लोक श्रेष्ठ सनातनम्।
शश्वदक्षर पर्यन्तमक्षरं सर्वतो मुखम्।। (शां. प. 64 : 22)

''इस प्रकार संसार भर में क्षत्रिय धर्म ही सब धर्मों में श्रेष्ठ, सनातन, अविनाशी एवं मोक्ष तक पहुँचानेवाला सर्वतोमुखी है।''

लोक ज्येष्ठं क्षात्र धर्मं (शां. प. 64 : 26) ''लोक में क्षात्र या क्षत्रिय धर्म ही सबसे श्रेष्ठ है।''

अतः स्वधर्म, स्वदेश एवं स्वबंधुओं की सुरक्षा एवं स्वदेश की सर्वांगीण उन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति का सबसे पहला कर्त्तव्य, अपने हृदय में बसी क्षत्रिय प्रवृत्तियों को जगाकर क्षत्रिय धर्म अपनाना है। क्योंकि आत्मा-परमात्मा का चिन्तन-मनन, ध्यान, आराधना, कथा-कीर्तन, सत्संग आदि केवल स्वराज्य में ही संभव है। परतंत्र, हिन्दू धर्म विरोधी, या इस्लामी राज्य में कदापि नहीं। संक्षेप में, निर्विघ्न ईश्वर पूजा-पाठ के लिए भी पहले स्वतंत्र, स्वाधीन एवं स्वधर्म एवं स्वधर्मानुसार राज्य व्यवस्था का होना अति आवश्यक और अनिवार्य है।

अतः **राष्ट्रभक्ति ही ईश्वर भक्ति है, स्वराष्ट्र रक्षा ही ईश्वर पूजा है।**

2. राजधर्म को प्रधानता दो

महाभारत में क्षात्र धर्म को राजधर्म भी कहा है और क्षात्र धर्म के समान राजधर्म को भी सर्वश्रेष्ठ धर्म माना गया है, जैसे–

सर्वे धर्मा राजधर्म प्रधानाः। सर्वेवर्णाः पाल्यमाना भवन्ति।

(शां. प. 63 : 27)

"सब धर्मों में राजधर्म सबसे श्रेष्ठ हैं। इसी से सब वर्णों की पालना होती है।"

सर्वे त्यागा राजधर्मेषु दृष्टाः। सर्वा दीक्षा राजधर्मेषु योक्ता।
सर्वा विद्या राजधर्मेषु युक्ताः सर्वे लोकाः राजधर्मेषु प्रविष्ठाः।।

(शां. 63 : 29)

"राजधर्म में सब प्रकार के त्यागों का दर्शन होता है। राजधर्म में सारी दीक्षाओं का प्रतिपादन होता है। राजधर्म में सम्पूर्ण विद्याऐं निहित होती हैं और राजधर्म में सारे लोकों का समावेश होता है।" यानी "राजधर्म द्वारा ही सारे संसार पर आधिपत्य किया जा सकता है। हिन्दू राजधर्म का अर्थ है–"राज्य सत्ता पाना और उसे पक्षपात रहित, समतावादी व्यवस्थानुसार लोक कल्याण के लिए न्यायपूर्वक चलाना।" अतः सांसारिक भोगों को प्राप्त करने एवं निर्बिन्ध अध्यात्म आराधना करने, दोनों के लिए स्वदेश पर अपनी राज व्यवस्था होना अनिवार्य है।

फिर क्षत्रिय धर्म है क्या ? आमतौर पर विश्वास किया जाता है कि क्षत्रिय जाति का युद्ध के मैदान में शत्रु से युद्ध करना ही क्षत्रिय धर्म है। परन्तु वास्तव में, हिन्दू धर्म के अनुसार, क्षत्रिय धर्म की अवधारणा अति व्यापक है।

आत्म त्यागः सर्वभूतानुकम्पा लोक ज्ञानं पालनं मोक्षणं च।
विषपणानामोक्षण पीडितानां क्षात्र धर्मे विद्यते पार्थिवानाम्।।

(शां. प. 64 : 27)

"***शत्रु से युद्ध करते हुए अपने शरीर की आहुति देना, समस्त*** प्राणियों पर दया करना, लोक व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करना, **प्रजा की रक्षा करना, विषाद ग्रस्त व पीड़ित स्त्री-पुरुषों को दुखों से मुक्ति दिलाना** आदि सभी बातें क्षत्रिय धर्म में सम्मिलित हैं।"

अतः क्षत्रिय धर्म का पालन केवल उन लोगों तक ही सीमित नहीं है जो सेना में भर्ती होकर राष्ट्र रक्षा के लिए बलिदान होते हैं, अथवा जो

एक जाति विशेष के लोग हैं, जो राजपूत या क्षत्रिय कहलाते हैं, बल्कि समाज के हर वर्ग के स्त्री, पुरुषों व बच्चों पर होने वाले सामाजिक आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक शोषणों एवं अन्यायों से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष करने का नाम क्षत्रिय धर्म है, और जो लोग ऐसा करते हैं, वे सभी क्षत्रिय हैं। वैदिक वर्ण व्यवस्था को मानने वाले प्रत्येक हिन्दू के हृदय में ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शुद्रत्व की प्रवृत्तियाँ समरसता के साथ विद्यमान रहती हैं यानी **प्रत्येक हिन्दू ब्राह्मण भी है, क्षत्रिय भी है, तथा वैश्य और शूद्र भी है** और आवश्यकतानुसार इनमें से कोई भी प्रवृत्ति मुख्य तथा सारे व्यक्तित्व पर छा जाती है जो इस वर्ण की प्रवृत्ति के कर्त्तव्य को पूरा करती है।

अतः धर्म एवं राष्ट्र रक्षा के संदर्भ में, प्रत्येक हिन्दू पहले क्षत्रिय है, फिर कुछ और। क्षात्र धर्म की उपरोक्त परिभाषा के अनुसार **'प्रजा की रक्षा करना' क्षत्रिय का धर्म** है और आज भारत की 85 प्रतिशत प्रजा हिन्दू है जिसके राजनैतिक हितों व धार्मिक अधिकारों की उपेक्षा हो रही है और उनकी रक्षा करने के लिए संघर्ष करना ही क्षत्रिय धर्म का पालन करना है। अतः आज की आवश्यकता है कि **प्रत्येक हिन्दू स्वदेश एवं स्वधर्म की रक्षा के लिए अपने क्षत्रिय धर्म के पालन करने का संकल्प ले और उसे पूरा करे।**

धर्मो रक्षति रक्षितः—पहले भारत में राजा स्वयं और अपने सैनिकों व देशवासियों की सहायता से शत्रु से लड़कर राज्य व प्रजा और उसके धर्म की रक्षा करता था। भारतीय इतिहास साक्षी है कि न केवल राजा व उसकी सेना ने बल्कि ब्राह्मणों व अन्य जातियों और यहाँ तक कि स्त्रियों एवं बच्चों ने भी सशस्त्र युद्धकर राष्ट्र व धर्म की रक्षा में महान योगदान दिया है परन्तु आज के हिन्दू विरोधी छद्म सैक्यूलरवादी प्रजातंत्र में प्रजा या **हिन्दू को अपने राष्ट्र व धर्म की रक्षा प्रजातंत्रीय ढंग से स्वयं करनी होगी वर्ना वह स्वयं मर जाएगा** जैसा कि मनुस्मृति में कहा गया है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्तो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।। (8 : 15)

"मारा व उपेक्षित किया हुआ धर्म, मारने वाले का नाश, और रक्षित किया हुआ धर्म, रक्षक की रक्षा करता है। इसलिए धर्म का हनन व उपेक्षा कभी न करो, इस डर से कि मारा हुआ उपेक्षित धर्म, कभी हमको ही न मार डाले।"

3. प्रजातंत्र में क्षत्रिय धर्म का पालन कैसे करें ?—अपने धर्म और संस्कृति को निर्विघ्न अपनाने के लिए व्यक्ति एवं राष्ट्र की सुरक्षा सबसे पहली आवश्यकता होती है, जो कि राजधर्म से ही संभव है। अतः हिन्दुओं को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष दिलाने वाली, उनके अन्दर विद्यमान, उनकी क्षत्रिय वृत्ति एवं कर्मठता ही है। यह क्षत्रिय धर्म ही है जो उन्हें शत्रु से संघर्ष करने को प्रेरित करता है। महाभारत व मनुस्मृति के धर्म रक्षा के उपरोक्त सूत्र, जितने प्राचीन काल में सच्चे ओर उपयोगी थे, उतने आज भी हैं। **आज हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति एवं स्वयं हिन्दुओं की रक्षा केवल कर्म-काण्ड, कीर्तन, चिन्तन-मनन ध्यान और सत्संग से नहीं हो सकती। निस्संदेह अध्यात्म साधना नैतिक शक्ति देती है परन्तु बिना राजधर्म या राजशक्ति के अध्यात्म अपंगु है। वह भी स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकता है।** इसके लिए धर्माचार्यों को हिन्दू धर्म शिक्षा की व्यवस्था प्रत्येक गाँव तक में करनी चाहिए तथा उन्हें अपने उपदेशों में राजधर्म और राजशक्ति पाने की प्रेरणा देनी चाहिए। इसीलिए आधुनिक राजधर्म के पुरोधा वीर सावरकर ने आत्म रक्षा के लिए यह सूत्र दियाः

"राजनीति का हिन्दूकरण और हिन्दू का सैनिकीकरण करो।" दुर्भाग्य से भारत का वर्तमान संविधान न केवल पक्षपाती एवं हिन्दू विरोधी है, बल्कि विघटनवादी है जिसे प्रजातंत्रीय ढंग से बदलने की जरूरत है। यह तभी संभव है, जब संसद एवं विधान सभाओं से राष्ट्रवादियों का आवश्यक बहुमत हो।

आज देश की सुरक्षा केवल न्यायपालिका, सुप्रीम कोर्ट आदि, और सेना के भरोसे रह गई है जिसे भी मुस्लिम सिरों की गिनती करके व राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करके, साम्प्रदायिक रंग से रंगा जा रहा है। ऐसे में दृढ़ संकल्पी, राष्ट्र एवं धर्म रक्षा को समर्पित, राष्ट्र भक्तों की आवश्यकता है जो पुलिस व सेना को स्थानीय दृष्टि से सहायक हो सकें। **यह कटु सत्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी जिहाद और साम्राज्यवादी ईसाइयत की आँधी को थोथे, अकर्मण्य और छदम् सेक्यूलरिज्म से नहीं रोका जा सकेगा** जब तक कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में राष्ट्र भक्ति और स्वदेश एवं स्वधर्म रक्षा का दृढ़ संकल्प न हो। ऐसे में हमें इसी हिन्दू समाज में से, अनेक राष्ट्र भक्तों के त्याग, तपस्या, साधना, और प्रचार-प्रसार से सामूहिक हिन्दू शक्ति

पैदा करनी होगी, 'हिन्दू वोट बैंक' सुदृढ़ करना होगा। इस शक्ति से हिन्दू का आत्म गौरव, आत्म सम्मान एवं स्वाभिमान जागृत करना होगा एवं स्वधर्म एवं स्वदेश की रक्षा होगी।

राष्ट्र रक्षा के लिए आह्वान

. हे आर्यो! हे हिन्दुओ! मत भूलो! कि तुम विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीनतम जाति हो जिसने विश्व को 'जियो और जीने दो' का सबसे पहले संदेश दिया। मानवता, सह-अस्तित्व व समतावादी मानवता के उच्च आदर्श दिए। आज विश्व धर्मों में जो मानवता दिखाई देती है, उसका आदि स्रोत, हिन्दुओं का वेद ज्ञान है, और वही समस्त हिन्दुओं की एकता का मुख्य आधार भी है।

अतः यदि हिन्दू अपने धर्म, संस्कृति व देश की रक्षा और संवर्धन चाहते हैं तो प्रत्येक हिन्दु अपने अन्तःकरण में सोए हुए क्षत्रियत्व को जगाए और धर्म रक्षा का व्रत लेकर अपनी योग्यतानुसार धर्मरक्षा के विभिन्न कार्यों में जुट जाएँ क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में धर्म रक्षा का दायित्व केवल सेना, सरकार या क्षत्रिय कही जाने वाली जाति पर नहीं, बल्कि प्रत्येक हिन्दू पर है। हमें अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़नी होगी। हमारे पूर्वजों ने हमारे धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष करके हमें बचाया है, और अब, हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अपनी भावी पीढ़ी की सुरक्षा के लिए त्याग, संघर्ष एवं बलिदान करें। अतः पहले हम अपनी सोई हुई क्षत्रिय प्रवृत्तियों को जगाएँ और फिर सम्प्रदाय, भाषा, बोली, जाति, उपजाति, क्षेत्र, प्रान्त आदि के भेदभावों को भुलाकर धर्मरक्षा का संकल्प लेकर रचनात्मक कार्यों में जुट जाएँ। इससे समाज में समरसता बढ़ेगी, राष्ट्र भक्ति जगेगी, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता सुरक्षित होगी।

हम निजी स्वार्थों, पद व मान के प्रलोभनों और आर्थिक लाभों को त्यागकर एवं राजनैतिक दलों से ऊपर उठकर, भारत में समतावादी व मानवतावादी हिन्दू राज्य स्थापित करने में जुट जाएँ। वर्तमान परिस्थितयों में, हिन्दू धर्म, संस्कृति एवं स्वयं अपने हिन्दू अस्तित्व की रक्षा और अन्य सभी समस्याओं और चुनौतियों का एकमात्र निदान एवं समाधान भारत में हिन्दू राज्य स्थापित करना है, और यदि यह प्रयास अभी सफल नहीं किया गया, तो बाद में ऐसा कर पाना और भी अधिक कठिन हो जाएगा।

राष्ट्र एवं धर्म रक्षा मंत्र

- धर्मान्तरितों को वापिस लाओ।
- धार्मिक सत्संगों में धर्मरक्षा की सामूहिक प्रतिज्ञा लो।
- पहले धर्म व देश रक्षा में जुट जाओ, बाकी काम बाद में।
- धर्म रक्षा के बलिदानी बनो।
- हिन्दू, अपने मंदिरों की रक्षा की प्रतिज्ञा लें।
- धर्माचार्य हिन्दुओं को, धर्म रक्षा का व्रती बनाऐं।
- हिन्दू अपने मन्दिरों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त कराऐं।
- हिन्दू की रक्षा ही राम, कृष्ण, गीता व रामायण की रक्षा है।
- पहले अपने राष्ट्र देव की रक्षा करो।
- हिन्दू धर्म की नींव को अपनी निष्ठा और बलिदान से सुदृढ़ करो।
- हिन्दू अपने हित से पहले सामाजिक हित को वरीयता दें।
- हिन्दू धर्म पालन द्वारा धर्म रक्षा का संकल्प लो।
- धर्मार्थ दान के बाद ही धन का भोग करो।
- हिन्दू राज्य की स्थापना को जीवन का लक्ष्य बनाओ।
- प्रत्येक हिन्दू स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा, स्वसाहित्य और स्वसंस्कृति की रक्षा का व्रत ले।
- हिन्दू हित के प्रत्येक कार्य व आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने की प्रतिज्ञा करो।
- हिन्दुओं की धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक उन्नति करने का दृढ़ संकल्प लो।
- चुनावों में हिन्दू-हितकारी प्रत्याशी को ही वोट दो।
- हिन्दू तन, मन, धन और जीवन में हिन्दुस्थान एवं हिन्दू धर्म की रक्षा की प्रतिज्ञा करें।

318

उठो, जागो

सब के पास जा-जाकर कहो, उठो, जागो और सोओ मत; सम्पूर्ण अभाव और दुख नष्ट करने की शक्ति तुम्हीं में है। इस बात पर विश्वास से ही वह शक्ति जाग उठेगी। .....यदि तुम भी सोच सको कि हमारे अन्दर अनन्त शक्ति, अपार ज्ञान व अदम्य उत्साह वर्तमान है, और अपने भीतर की शक्ति को जगा सको, तो तुम भी मेरे समान हो जाओगे।

हिन्दुस्थान आदि काल से हिन्दुओं की मातृभूमि, पितृभूमि एवं कर्मभूमि रही है। अतः हिन्दू उस पर अपना राज्य स्थापित करने का संकल्प लें।

—स्वामी विवेकानन्द, राष्ट्र को आह्वान, पृष्ठ १३

हिन्दू राइटर्स फोरम
129 बी, एम. आई. जी.
राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-27

रु. 5/-